ISSN 3139-3284 (ONLINE)

VOL. 1

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

A PEER-REVIEWED · MULTIDISCIPLINARY · MULTILINGUAL JOURNAL

Knowledge Beyond Boundaries…

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

S N A J

Open Access · Online · Biannual · Double-Blind Peer Reviewed
Crossref Indexed DOI · Multidisciplinary · Multilingual

VOLUME 1 · ISSUE 1

JANUARY – JUNE 2026

CHIEF EDITOR

Dr. Mohammad Zahid

www.snaj.org.in

ISSUE 1

ISSN 3139-3284 (Online)

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL
Volume 1 · Issue 1 · January – June 2026

FOREWORD

It is with immense pride and a deep sense of purpose that I present the inaugural issue of the Shibli National Academic Journal (SNAJ) to the global community of scholars, researchers, and students. Named in reverence to the towering legacy of Allama Shibli Nomani — a scholar whose intellectual contributions transcended boundaries of language, discipline, and geography — this journal aspires to carry forward that same spirit of rigorous, cross-cultural inquiry.

SNAJ was conceived from a simple but pressing conviction: that meaningful scholarship should not be confined by the language in which it is written, nor by the discipline from which it emerges. India's intellectual tradition has long thrived at the confluence of languages — English, Hindi, and Urdu among them — and it is this confluence that our journal seeks to honour. By welcoming original research across the humanities, social sciences, education, and emerging interdisciplinary , multilingual fields, we hope to build a genuinely inclusive platform for academic dialogue.

As Chief Editor, I have had the privilege of witnessing the dedication of our editorial board, reviewers, and contributors, whose collective commitment has shaped this first issue. Every article herein has passed through a rigorous double-blind peer review/ indexed process, and each is assigned a Crossref indexing, registered DOI, reflecting our unwavering commitment to academic integrity, originality, and permanence in the global research ecosystem.

I extend my heartfelt gratitude to our esteemed reviewers, editorial board members, and the scholars who entrusted us with their research. It is through their collective effort that this journal has moved from vision to reality. I also invite researchers, academicians, and students from across disciplines and linguistic traditions to consider SNAJ as a home for their scholarship in the issues to come.

It is my sincere hope that this journal will serve not merely as a repository of research, but as a living, evolving conversation — one that bridges languages, disciplines, and generations of scholars in pursuit of knowledge.

With warm regards,

Dr. Mohammad Zahid
Chief Editor
Shibli National Academic Journal (SNAJ)

Shibli National Academic Journal
Vol. No. 1, Issue No. 1, Jan- Jun 2026

ISSN- 3139 - 3284

Received Date: 15/02/2026, **Revised Date:** 10/03/2026, **Accepted Date:** 26/05/2026, **Published Date:** 30/06/2026

ग्रामीण व वाणिज्य केन्द्रों की क्षेत्रीय अंतरप्रक्रिया एवं उपभोक्ता संचरण प्रतिरूप : आजमगढ़ जनपद के विशेष संदर्भ में

डॉ0 मुहम्मद असअद अल्वी[1]

https://orcid.org/0009-0006-5850-1889

शोध सारांश–

ग्रामीण एवं वाणिज्यिक केन्द्रो के बीच होने वाला वस्तुओ, सेवाओं, पूंजी, सूचना तथा जनसंख्या का आदान–प्रदान क्षेत्रीय अंतर प्रक्रिया कहलाता है। यह प्रक्रिया किसी क्षेत्र के आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण क्षेत्र कृषि एवं कच्चे माल के उत्पादन के प्रमुख स्रोत होते हैं, जबकि वाणिज्यिक केंद्र इन उत्पादों के संग्रहण, प्रसंस्करण, वितरण और विपणन का कार्य करते हैं। दोनों के मध्य स्थापित यह संबंध क्षेत्रीय विकास का आधार बनता है, जबकि उपभोक्ता अपनी आवश्यकताओं, क्रय शक्ति, वस्तुओं की उपलब्धता, दूरी, परिवहन सुविधाओं तथा समय के आधार पर निकटवर्ती या दूरस्थ वाणिज्य केन्द्रो की ओर आवागमन करते हैं। इस प्रक्रिया को उपभोक्ता संचरण कहा जाता है। अध्ययन क्षेत्र के उपभोक्ता अपनी दैनिक जरूरत को पूरा करने के लिए स्थानीय स्तर पर गांव या मोहल्ले के दुकानों से क्रय करते हैं, जबकि कुछ वस्तुओं के लिए क्षेत्रीय स्तर पर छोटे व मध्यम स्तर के वाणिज्यिक केन्द्रो तक जाते हैं, वहीं कुछ विशिष्ट वस्तुओं के क्रय हेतु जनपद मुख्यालय या बड़े बाजारों तक संचरण करते हैं।

मुख्य शब्द– *वाणिज्यिक केंद्र, उपभोक्ता संचरण, क्षेत्रीय अंतर प्रक्रिया, यातायात प्रतिरूप, क्षैतिज अंतर प्रक्रिया, लंबवत अंतर प्रक्रिया, कार्यात्मक अंतर प्रक्रिया, उपभोक्ता सर्वेक्षण संचरण, रोजमर्रा के समान, विशिष्ट वस्तुए।*

प्रस्तावना–कोई भी नगरीय या वाणिज्यिक केन्द्र चाहे वह पूर्ण विकासित ही क्यों न हों सर्व प्रथम उसका उद्‌भव एक छोटी बस्ती या पूर्वा के रूप में होता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि ग्रामीण व नगरीय केन्द्रों के मध्य अनान्य सम्बन्ध होता है। चूंकि ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रों के मध्य क्षेत्रीय अर्न्तप्रक्रिया भूवैन्यासिक संगठन के अभिन्न तत्व हैं। भूवैन्यासिक संगठन के अंतर्गत किसी प्रदेश विशेष के संदर्भ में मानव क्रिया–कलापों एवं उससे उत्पन्न मूर्त तत्वों के अर्न्तसम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। इस सन्दर्भ में एस0 सी0 बंशल, मिश्रा, श्रीवास्तव, यादव, सिंह वर्मा, इस्लाम, सिंह, शर्मा, प्रसाद, आदि ने अपना–अपना विचार व्यक्त किया है। इस प्रकार मानव क्रिया–कलापों तथा उससे जनित स्थितिगत संरचनात्मक अभिव्यक्तियों के अंतर्गत कारखाना, ग्राम, नगर, कृषि फार्म आदि के विभिन्न तत्व एवं इनमें कार्यात्मक सम्बद्धता स्थापित करने वाली अन्तरप्रक्रिया जैसे– परिवहन, गमनागमन, संचार, सम्पर्क तथा सूचना आदि आती है। ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रों के मध्य क्षेत्रीय अंतरप्रक्रिया परस्पर संयुक्त तथा एक दूसरे पर आश्रित एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी क्षेत्र के लिए समन्वित संरचना स्वरूप प्रदान करती है। दो वाणिज्यिक केन्द्रो के मध्य अंतरप्रक्रिया को क्षैतिज व लंबवत अंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। क्षैतिज अन्तर प्रक्रिया के अंतर्गत परिवहन प्रतिरूप व वाणिज्यिक केन्द्रो के कार्यात्मक अंतरप्रक्रिया को सम्मिलित किया जाता

1-असिस्टेन्ट प्रोफेसर (वाणिज्य विभाग) शिब्ली नेशनल कालेज, (MSDU) आजमगढ़ (उ0प्र0)– 276001.

है। जबकि लंबवत अंतरप्रक्रिया के अंतर्गत उपभोक्ता संरक्षण के प्रतिरूप व उसके व्यवहार के महत्व को परखा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रो के मध्य अंतरप्रक्रिया को स्पष्ट करना।
2. क्षैतिज अंतरप्रक्रिया के अंतर्गत यातायात प्रतिरूप को स्पष्ट करना।
3. लंबवत अंतर प्रक्रिया के अंतर्गत उपभोक्ता संचरण के प्रतिरूप को दृष्टिगत करना।
4. उपभोक्ता संचरण के सर्वेक्षण से प्राप्त परिणामों की व्याख्या करना।
5. उपभोक्ता संचरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारकों को उजागर करना।

आंकड़ों का संग्रहण एवं विधि तंत्र– प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने हेतु प्राथमिक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। इन आंकड़ों को प्राप्त करने हेतु अध्ययन क्षेत्र के कुछ चयनित ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रो से विभिन्न जोत आकर के कृषक, नौकरी पेशा, व व्यापार आदि में संलग्न परिवारों के मुखिया से विभिन्न स्तर के घरेलू व आवश्यक वस्तुओं के क्रय–विक्रय हेतु उद्देश्य से से संबंधित प्रश्न पूछे गए हैं, तत्पश्चात् प्राप्त परिणामों के आधार पर अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रो के बीच अंतर प्रक्रिया व उपभोक्ता संचरण से प्राप्त परिणामों की व्याख्या प्रस्तुत की गई है। शोध पत्र को वैज्ञानिक व सुस्पष्ट रूप से समझने हेतु आवश्यकता अनुसार मानचित्रों का भी समावेश किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र–आजमगढ़ जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश के केंद्र बिंदु के रूप में 25^0 $35^{|}$ से 26^0 $29^{|}$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^040^{|}$ से 83^0 $45^{|}$ पूर्वी देशांतर के मध्य त्रिभुजाकार आकृति में फैला है। जिसकी पूर्व से पश्चिम अधिकतम चौड़ाई 74 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण दिशा में लंबाई 80 किलोमीटर है। इसकी उत्तरी पश्चिमी सीमा पर अंबेडकर नगर, उत्तरी पूर्वी सीमा पर गोरखपुर, दक्षिणी पश्चिमी सीमा पर जौनपुर, पश्चिमी सीमा पर सुल्तानपुर, पूर्वी सीमा पर मऊ तथा दक्षिणी पूर्वी सीमा पर गाजीपुर जनपद स्थित है। इस जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 4234 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से जनपद को 8 तहसीलों क्रमशः सगड़ी, बुढ़नपुर, आजमगढ़ सदर, निजामाबाद, फूलपुर,

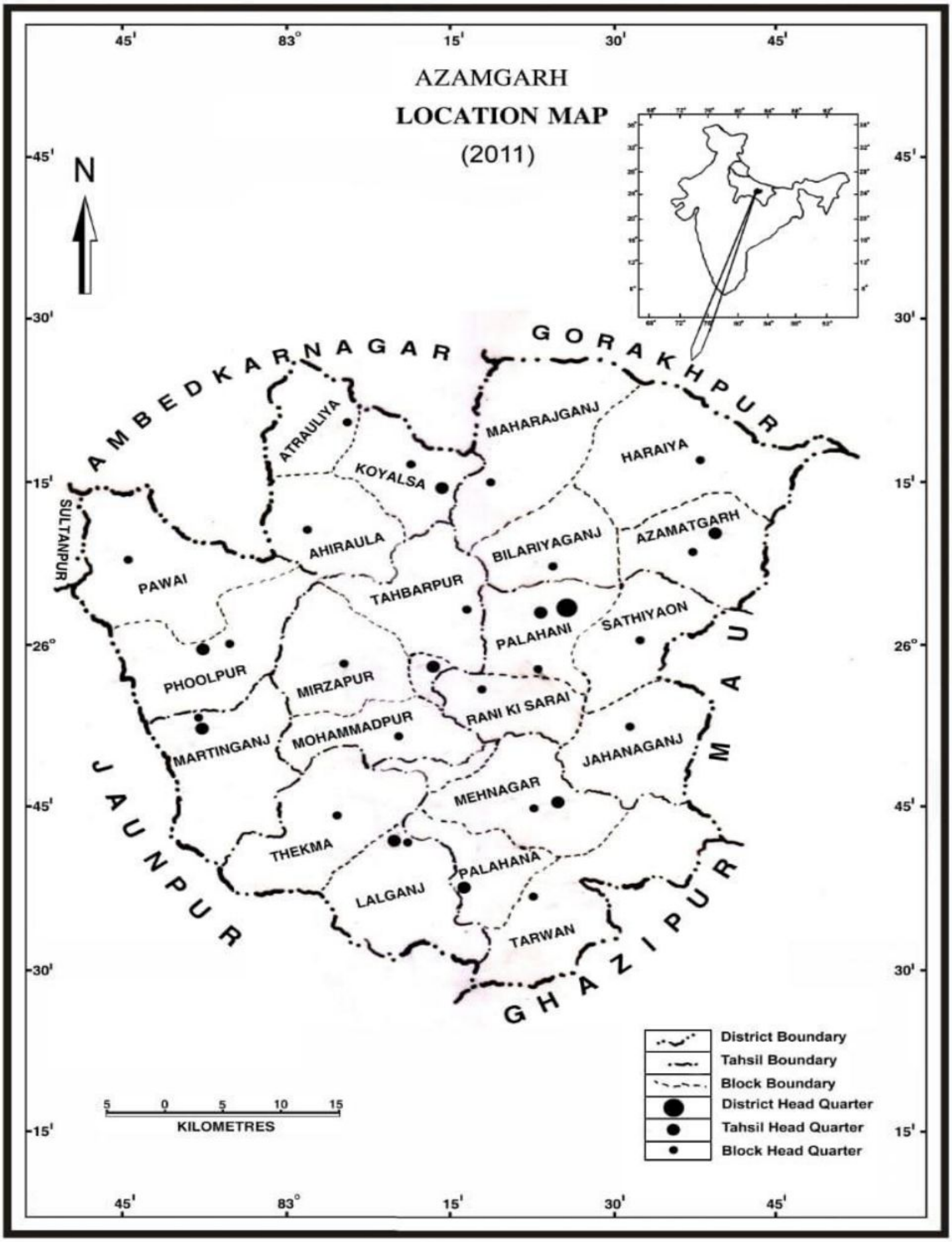

AZAMGARH
LOCATION MAP
(2011)
N
45'
83°
15'
30'
45'
26°
AMBEDKARNAGAR
GORAKHPUR
SULTANPUR
JAUNPUR
GHAZIPUR
MAU
ATRAULIYA
KOYALSA
MAHARAJGANJ
HARAIYA
AHIRAULA
PAWAI
BILARIYAGANJ
AZAMATGARH
TAHBARPUR
PALAHANI
SATHIYAON
PHOOLPUR
MIRZAPUR
RANI KI SARAI
MARTINGANJ
MOHAMMADPUR
JAHANAGANJ
MEHNAGAR
THEKMA
LALGANJ
PALAHANA
TARWAN
5 0 5 10 15
KILOMETRES
District Boundary
Tahsil Boundary
Block Boundary
District Head Quarter
Tahsil Head Quarter
Block Head Quarter

FIG-1

विकासखण्डों, 280 न्याय पंचायतो, 4107 ग्रामों में विभाजित किया गया है (मानचित्र सं0 1)। जनपद में कुल 20 नगरीय केंद्र स्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 4613913 है। जिसमें 8.5 प्रतिशत नगरीय है।

विश्लेषण एवं व्याख्या–

किसी क्षेत्र विशेष में ''केन्द्र स्थल तन्त्र'' उसके क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया के परिणाम होते है। जैसा कि क्रिस्टालर द्वारा प्रतिस्थापित केन्द्र स्थल सिद्धांत में केन्द्र स्थलों के आकार प्रकार, वितरण तथा उनके अंर्तसम्बन्धों के अध्ययन से स्पष्ट होता है। व्यापारिक जगत में क्षेत्रीय अंतरप्रक्रिया की महत्वपूर्ण व्याख्या एवं इसके विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का श्रेय उलमैन महोदय को जाता है। जिन्होंने इस प्रकार के अध्ययन को 'व्यापार का मर्म' कहा। इनके अनुसार क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया स्थानों के क्षैतिज सम्बन्धों का विलेषण स्थिति एवं विस्तार के सम्बन्ध में करती है। आगे चलकर उलमैन ने बताया कि दो स्थानों के मध्य कार्यात्मक सम्बन्धों की गहनता विशेषतया तीन तत्वों पर आधारित है।

अ– परिपूरकता।

ब– स्थानान्तरणशीलता।

स– मध्यस्थ अवसरों की कमी।

(अ) परिपूरकता : –परिपूरकता से तात्पर्य पूर्ति एवं मांग के स्थानात्मक सामंजस्य से है। दो स्थानों के बीच अन्तरप्रक्रिया उसी दशा में होती है जब एक स्थान पर किसी बिस्तु विशेष की अधिकता हो और दूसरे स्थान पर उसकी मांग हो। यह प्रक्रिया आर्थिक दूरी या कार्यात्मक दूरी के अनुसार संचालित होती है।

(ब) स्थानान्तरणशीलता :–स्थानान्तरण से तात्पर्य यात्रा करने वाले व्यक्तियों की तत्परता एवं साधन तथा मार्ग की सुलभता से है।

(स) मध्यस्थ अवसरों की कमी :– दो केन्द्रों के बीच लगातार कार्यात्मक सम्बद्धता के लिए उनके मध्य मध्यस्थ अवसरों की कमी का होना अनिवार्य है क्योंकि दो स्थानों के बीच उसी स्वभाव के (सेवा सम्भरण की क्षमता रखने वाले) किसी तीसरे स्थान के अभ्युदय से उनके बीच यात्रा बारम्बाता में कमी आ जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया :–अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रों में 'क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया' या कार्यात्मक 'क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया' का अध्ययन दो प्रकार से किया जाता है।

1. क्षैतिज अन्तरप्रक्रिया :–इसके अंतर्गत यातायात प्रतिरूप का अध्ययन सम्मिलित है।

2. लम्बवत अन्तरप्रक्रिया :– इसमें ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रों पर उपभोक्ताओं के संचरण प्रतिरूप का अध्ययन समाहित है।

क्षैतिज अन्तरप्रक्रिया :– इसके अंतर्गत अध्ययन क्षेत्र के यातायात प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है।

यातायात प्रतिरूप :–सड़क परिवहन के द्वारा क्षैतिज अन्तरप्रक्रिया का अध्ययन काफी प्रचलित है क्योंकि उपभोक्ताओं को बाजार केन्द्र पर पहुंचाने के लिए रेल यातायात की अपेक्षा बस सेवा से समय की बचत होती है। अतः बस या आटों यातायात प्रतिरूप का अध्ययन समीचीन है। अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी केन्द्रों तक बस या आटो सेवा उपलब्ध है। कुछ ही केन्द्र ऐसे हैं जो परिवहन मार्ग से थोड़ा दूर होने के कारण सीधे बस सेवा से नहीं जुड़ सके हैं, लेकिन आटो रिक्शा, मोटर साइकिल, साइकिल आदि द्वारा कम समय में वहां तक पहुंचा जा सकता है। जैसे– सराय मोहन, हरैया, पुक, मालटारी, मित्तुपुर, बिन्दवल, दुर्वासा, आदि ग्रामीण वाणिज्यिक केन्द्रो पर परिवहन निगम की बसे केन्द्र के वाह्य मार्ग 1–3 किमी. दूर से गुजरती है। आज़मगढ़ जनपद

में पूर्वी उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा बस स्टेशन व बस डिपो (आज़मगढ़ डिपो व डा0 अम्बेडकर डिपो) के कारण बस सेवा के सर्वसुलभ होने से लगभग प्रत्येक पक्के मार्गों पर प्रतिदिन बसों का आना–जाना लगा रहता है। आज़मगढ़ जनपद में सर्वप्रथम 13 मार्च 1949 को 5 बसों के साथ आज़मगढ़ डिपो का उद्घाटन हुआ और उसी दिन रोडवेज की बसे आज़मगढ़ से मऊ और वाराणसी को चली। वर्तमान समय में आज़मगढ़ जनपद से उत्तर प्रदेश के प्रमुख नगरों, गोरखपुर, वाराणसी, बलिया, गाजीपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद, लखनऊ, मेरठ, गाजियाबाद, दिल्ली आदि स्थानों के लिए प्रतिदिन बसों की लाइन लगी रहती है। इस केन्द्रों से होकर गुजरने वाली बसों की संख्या प्रतिदिन 348 है जिसमें 142 बसे आज़मगढ़ व अम्बेडकर डिपो की है तथा शेष 206 बसें अन्य डिपो की जनपद से गुजरती हुयी जाती है जो अन्य ग्रामीण वाणिज्यिक केन्द्रो को भी यातायात सुविधा प्रदान करती है (मानचित्र संख्या 2)। बस यातायात की सघनता आज़मगढ़–वाराणसी मार्ग, आज़मगढ़–लखनऊ मार्ग पर सर्वाधिक है जिससे प्रतिदिन 108 व 123 बसें यातायात सुविधा प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त आज़मगढ़ – गोरखपुर, आज़मगढ़ –मऊ–बलिया, आज़मगढ़–इलाहाबाद, आज़मगढ़–गाजीपुर रूट पर प्रतिदिन क्रमशः 85, 78, 65, 18 बसें आवागमन करती है। इसके अतिरिक्त आज़मगढ़–बिलरियागंज, आज़मगढ़–मुबारकपुर, आज़मगढ़–मेंहनगर, लालगंज–तरवां, लालगंज–बरदह, बिलरियागंज–जीयनपुर आदि परिवहन निगम के बस रूट है जिस पर प्रतिदिन 2–10 बसें आवागमन करती है।

आज़मगढ़ जनपद में रेल परिवहन का विकास अर्द्ध विकसित अवस्था में है। आज़मगढ़ जनपद के मध्य भाग से एकमात्र रेलवे लाइन मऊ–शाहगंज गुजरती है जिसकी कुल लम्बाई जनपद में 44 किमी है। इस रेलवे लाइन पर अध्ययन क्षेत्र के 5 ग्रामीण वाणिज्यिक केन्द्र ही अवस्थित है जिनमें फरिहा, सेठवल (रानी की सराय), संजरपुर, पवई व अम्बारी हैं। इस प्रकार आज़मगढ़ जनपद में यातायात परिवहन में रेलवे का द्वितीय स्थान है। अध्ययन क्षेत्र के इस रेल रूट पर प्रतिदिन 10–16 ट्रेनों का ही गुजरना होता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के इस रेल रूट पर ग्रामीण वाणिज्यिक केन्द्रो का बहुत कम विकास हुआ है। (मानचित्र संख्या 2)

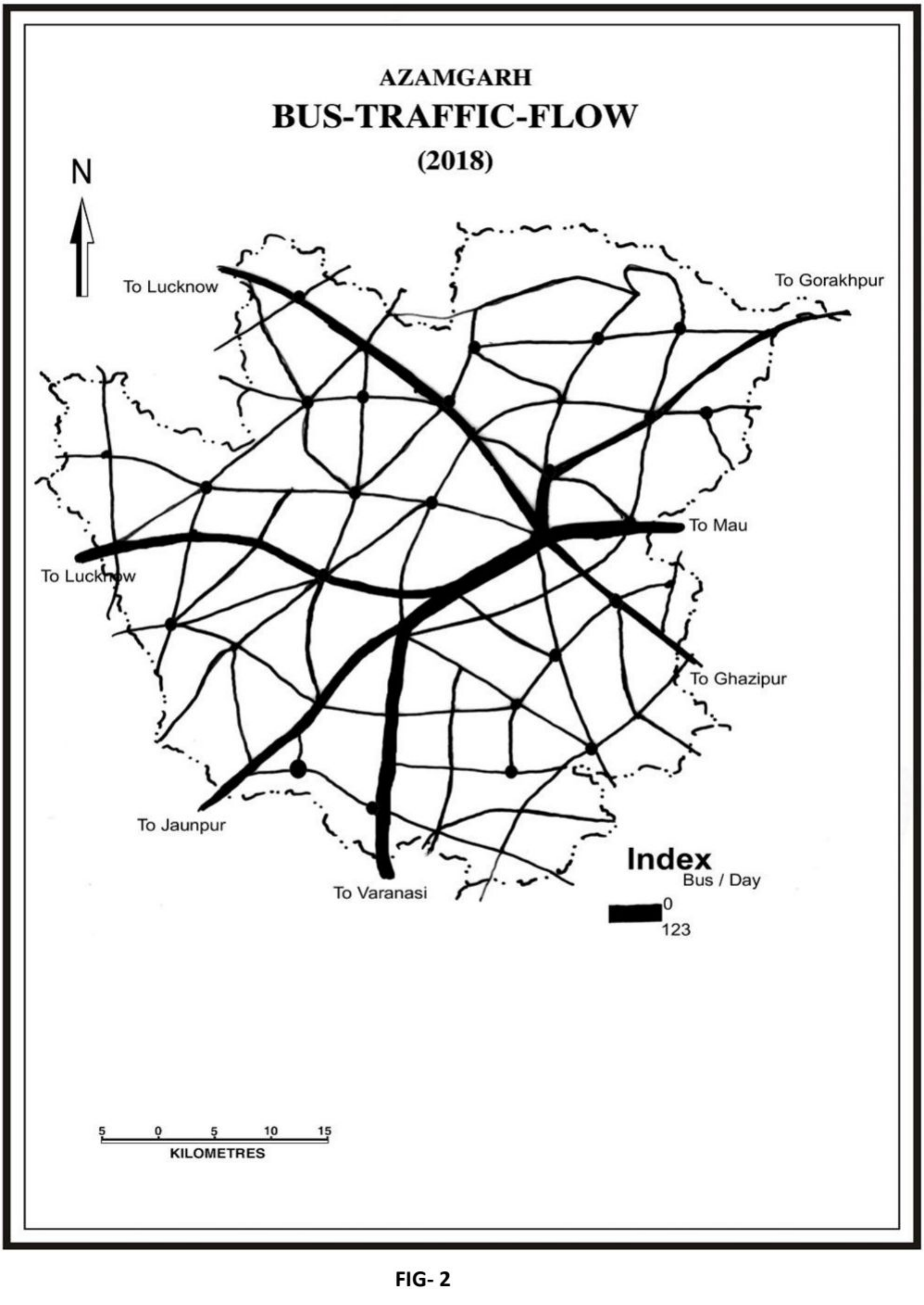
AZAMGARH
BUS-TRAFFIC-FLOW
(2018)
N
To Lucknow
To Gorakhpur
To Mau
To Lucknow
To Ghazipur
To Jaunpur
To Varanasi
Index
Bus / Day
0
123
5 0 5 10 15
KILOMETRES

FIG- 2

लम्बवत् अन्तरप्रक्रिया– इसके द्वारा उपभोगता संचरण प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है।

उपभोक्ता संचरण प्रतिरूप :– लम्बवत् अन्तरप्रक्रिया के अन्तर्गत उपभोक्ताओं के द्वारा उनके आवश्यक सामानों के क्रय–विक्रय हेतु वाणिज्यिक स्थलों तक संचरण के स्वरूप एवं उसकी प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। इसलिए इसे उपभोक्ता संचरण प्रतिरूप कहते हैं। उपभोक्ताओं के संचरण प्रतिरूप के अध्ययन से किसी क्षेत्र के भावी विकास हेतु योजना प्रस्तुत की जा सकती है क्योंकि किसी भी क्षेत्र के वाणिज्यिक स्थलों के विभिन्न स्तरों (पदानुक्रम) के मध्य 'क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया' के अध्ययन द्वारा वहां पर ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रो के चयन एवं उनकी क्षमता निर्धारण में सहायता मिलती है। अतः ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रों के अध्ययन में क्षेत्रीय अन्तरप्रक्रिया का अध्ययन अपरिहार्य है।

उपभोक्ता संचरण सर्वेक्षण :– आज़मगढ़ जनपद में उपभोक्ताओं के संचरण प्रतिरूप के अध्ययन हेतु नमूनो के तौर पर जनपद के दो बड़े नगरिय केन्द्रों जिला मुख्यालय आजमगढ़ व लालगंज के अतिरिक्त प्रत्येक विकसखण्ड से दो–दो केन्द्रों सहित कुल 46 ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रों का चयन कर उनका सर्वेक्षण किया गया है (मानचित्र संख्या 3)। ग्रामों व वाणिज्यिक केन्द्रों के प्रतिचयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि प्रतिचयनित ग्राम व वाणिज्यिक केन्द्र जनपद के लगभग सभी क्षेत्रों एवं दशाओं का प्रतिनिधित्व करते हो। जैसे– कुछ गांव यातायात मार्ग से दूर आंतरित क्षेत्रों में अवस्थित हो, तो कुछ गांव यातायात मार्ग के निकट हो, तो कुछ गांव विकसित हो तो कुछ गांव अविकसित हो तथा कुछ में साप्ताहिक बाजारे लगती हो इत्यादि। इन ग्रामों में हरैया, हाजीपुर, रौनापार, नन्दना, लोहरा, लाटघाट, घाघरा नदी के बाढ़ क्षेत्र में अवस्थित है। जबकि सुरहन, सराय मोहन, सुम्भाडीह, ऊंचहुआ, पूक, मित्तूपुर, गौरी, पल्हना, शिवपुर, विन्दवल, महुआमुरारपुर, अतरैठ, दौलताबाद, दुर्वासा, गहजी, भुजही, नेवादा, देवरिया, खुजरी, बीबीपुर, पन्दहां आदि ग्राम परिवहन मार्ग (रोडवेज मार्ग) से दूर स्थित है तथा रानीपुर रजमो, फरिहा, संजरपुर, कप्तानगंज आदि परिवहन मार्ग पर अवस्थित है। ग्राम बिन्द्राबाजार, तरवां, मेहनाजपुर, मोहम्मदपुर, जहानागंज, बनकट आदि में बाजारें लगती है।

सर्वप्रथम इन ग्रामों या वाणिज्यिक केन्द्रो के अंतर्गत आर्थिक स्तर के आधार पर (धनी, निर्धन एवं मध्यम) पांच से सात परिवारों का चयन किया गया। जैसे – भूमिहीन, खेतिहर मजदूर, एक एकड़ जोत वाले कृषक, तीन से चार एकड़ जोत वाले कृषक, 10 एकड़ या इससे अधिक एकड़ वाले कृषक, नौकरी पेशा या व्यापार व अन्य कार्य में कार्यरत परिवार के मुखिया से निम्नलिखित स्तर के आवश्यक सामानों के क्रय–विक्रय हेतु प्रश्न पूछे गये।

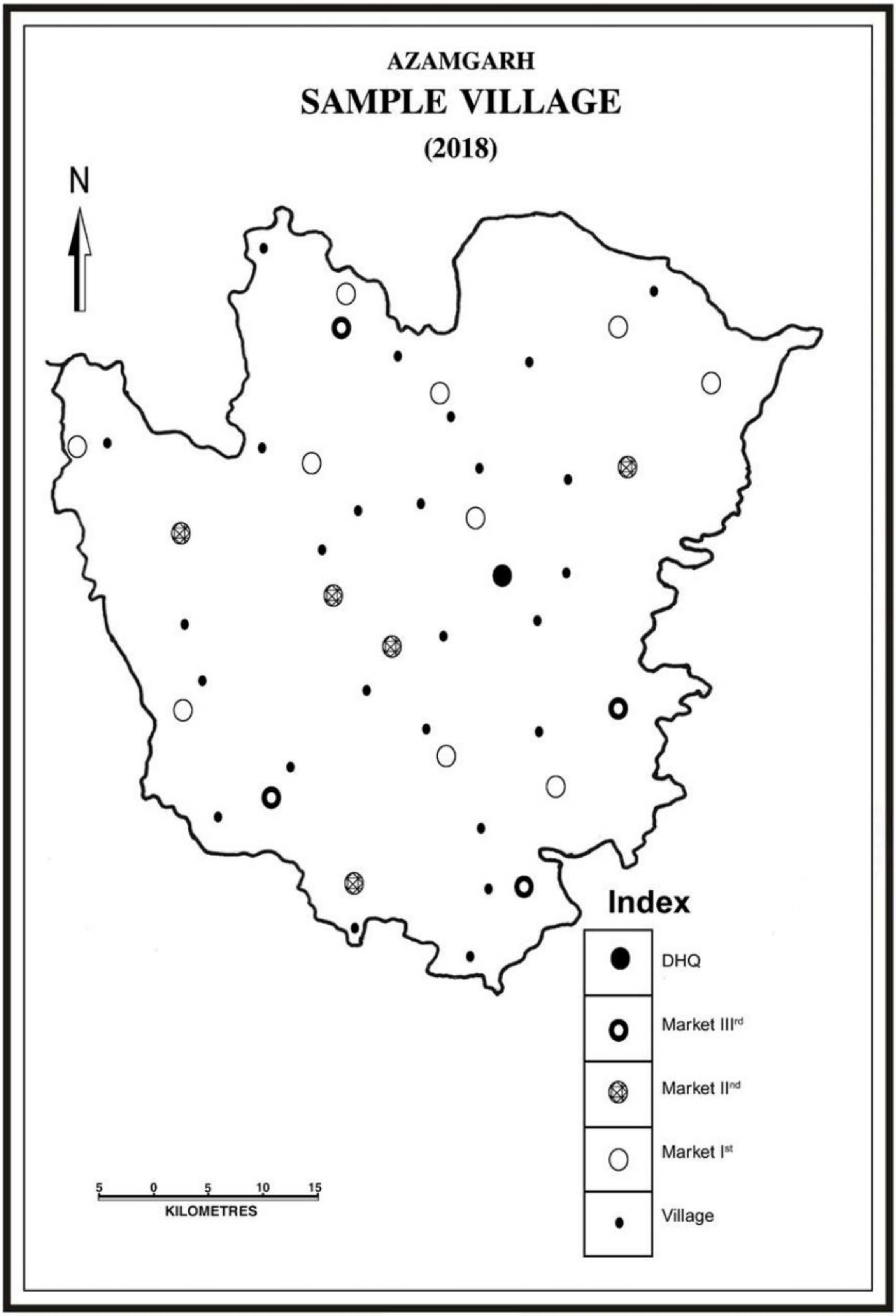
AZAMGARH
SAMPLE VILLAGE
(2018)
N
Index
DHQ
Market IIIrd
Market IInd
Market Ist
Village
5 0 5 10 15
KILOMETRES

FIG- 3

प्रथम स्तर में प्रतिदिन उपभोग में आने वाली सामान जैसे नमक, तेल, मसाला, गोश्त, मछली, शाक–सब्जी आदि। द्वितीय स्तर के सामानों में सप्ताह या एक महीने तक खर्च के लिए खरीदे जाने वाले सामान, जैसे कपड़ा, रेडीमेड, बर्तन, दवा, स्टेशनरी, जूता–चप्पल, सौन्दर्य प्रसाधन आदि। तृतीय स्तर के अंतर्गत खरीदे जाने वाले सामान जैसे – घड़ी, मोबाइल, आभूषण, ऊनी कपड़े, कृषि यंत्र, कार, जीप, मोटर साईकिल, भवन निर्माण सामाग्री, शादी–विवाह के अवसरों पर उपहार के सामान आदि जो कभी–कभी क्रय किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त बाजार जाने के साधन बाजार जाने की आवृत्ति (प्रतिदिन, प्रतिसप्ताह व मासिक) निकटतम बाजार, आस–पास के अन्य बाजारों में गमनागमन की प्रवृत्ति तथा सामनों के विक्रय हेतु गन्तव्य स्थान के विषय में साक्षात्कार द्वारा जानकारी प्राप्त की गयी।

उपभोक्ता संचरण सर्वेक्षण से प्राप्त परिणाम :

उपभोक्ताओं से साक्षात्कार के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला गया कि उनके बाजार संचरण का प्रतिरूप उपभोक्ता द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं के प्रकार तथा उनकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। जैसे प्रतिदिन उपयोग में जाने वाले समान जैसे नमक, मसाला, तेल, आटा, सब्जी, दाल, चावल आदि अधिक से अधिक 3–4 किसी के निकट बाजार से पैदल, साईकिल, रिक्सा, मोटर साईकिल द्वारा जाकर प्राप्त करते हैं। यह क्रय–विक्रय बिन्दु निकट का बाजार या साप्ताहिक बाजार या दैनिक बाजार भी हो सकता है।

द्वितीय स्तर की वस्तुओं कपड़ा, जूता, बर्तन, दवा, स्टेशनरी, रेडीमेड, सौन्दर्य, प्रसाधन आदि को प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता अपने निकट के प्रसिद्ध केन्द्र स्थल तक 20–35 किमी तक जाते हैं (मानचित्र संख्या 4)।

इस क्रम में तृतीय स्तर के विशिष्ट व बड़े या कीमती सामान जैसे घड़ी, टी0वी0, मोबाइल, फ्रिज, कृषि यन्त्र, ट्रैक्टर, कार, जीप, मोटर साईकिल, भवन निर्माण सामग्री आदि एक तो उच्च स्तर के लोग ही प्रयोग करते हैं। दूसरे वे उसे प्राप्त करने के लिए या तो 'क्षेत्रीय केन्द्र' अतरौलीया, लालगंज, मेंहनगर, मुबारकपुर या जनपद मुख्यालाय या बाहर के समीपवर्ती केन्द्रों में जाते हैं जिनमें, गोरखपुर, वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, फैजाबाद, बलिया, मऊ आदि नगरीय केन्द्र प्रमुख है।

उपभोक्ता संचरण प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक :

अध्ययन क्षेत्र में उपभोक्त संचरण को प्रभावित करने वालें कारकों में निम्न कारक प्रमुख है।

1– उपभोक्ताओं द्वारा बाजार बिन्दुओं तक संचरण की बारम्बारता आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। उदाहरणार्थ कम आय वाले दैनिक मजदूर अपनी आवश्यकता के अधिकतम सामान लगभग प्रतिदिन या सप्ताह में दो–तीन बार खरीदते है क्योंकि उनके पास धन का अभाव है जिससे वे थोक सामान आय के उपभोक्ता साप्ताहिक बाजारों से अपने सामान खरीदते हैं। उच्च स्तर के लोग अपने दैनिक प्रयोग के आवश्यक सामान निकट के बाजारों से थोक में पूरे माह भर के लिए इकट्ठे खरीद लेते हैं तथा अन्य कीमती वस्तुओं की प्राप्ति हेतु वे क्षेत्रीय 'ग्रामीण वाणिज्यिक केन्द्रो ' या 'स्थानीय संगम स्थल' को 20–35 किमी तक जाते हैं।

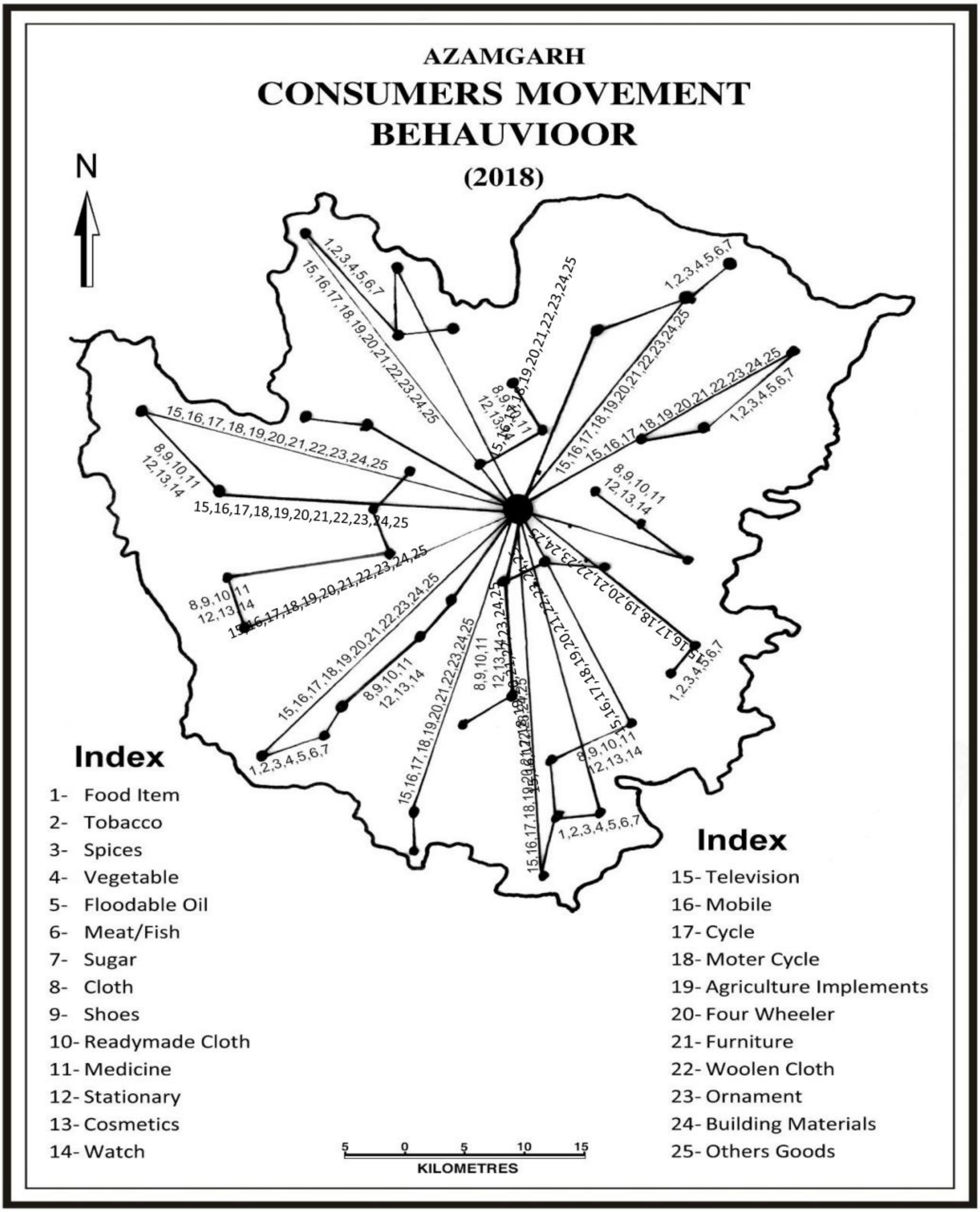
AZAMGARH
CONSUMERS MOVEMENT
BEHAUVIOOR
(2018)
N
Index
1- Food Item
2- Tobacco
3- Spices
4- Vegetable
5- Floodable Oil
6- Meat/Fish
7- Sugar
8- Cloth
9- Shoes
10- Readymade Cloth
11- Medicine
12- Stationary
13- Cosmetics
14- Watch
Index
15- Television
16- Mobile
17- Cycle
18- Moter Cycle
19- Agriculture Implements
20- Four Wheeler
21- Furniture
22- Woolen Cloth
23- Ornament
24- Building Materials
25- Others Goods
5 0 5 10 15
KILOMETRES

FIG- 4

2– यदि कोई ग्राम उच्च पदानुक्रम वर्ग के केन्द्र स्थल के समीप अवस्थित नहीं है तो वहां के उपभोक्ताओं को विभिन्न वस्तुओं की प्राप्ति हेतु विभिन्न केन्द्रों तक जाना पड़ता है।

3– उपभोक्ताओं द्वारा अपने सामानों के क्रय–विक्रय हेतु ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रो के चयन को प्रभावित करने वाले कारकों में उपभोक्ता की आय, केन्द्र स्थलों के मध्य ग्रामों की अवस्थिति, यातायात की सुविधा, केन्द्र स्थलों का पदानुक्रमित महत्व तथा उपभोक्ताओं का किसी बाजार विशेष में दुकानदारों से वैयक्तिक सम्बन्ध सामान की क्वालिटी एवं अच्छी व सस्ती कीमत एवं सांस्कृतिक परम्परा जैसे कारक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष–

ग्रामीण व वाणिज्यिक केद्रों के बीच अंतरप्रक्रिया क्षेत्रीय विकास का महत्वपूर्ण आधार है यह विभिन्न क्षेत्रों के बीच वस्तुओं सेवाओं पूंजी और सूचनाओं के प्रवाह को बढ़ाकर सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करती है तथा क्षेत्रीय और असमानताओं को कम करने में सहायक होती है वहीं उपभोक्ता संरक्षण उपभोक्ताओं के उस आवागमन या स्थानिक गति से जिसके माध्यम से वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न स्तर के बाजारों सेवा केद्रो व वाणिज्यिक केद्रो तक पहुंचाते हैं और वस्तुओं तथा सेवाओं का क्रय–विक्रय करते हैं। अध्ययन क्षेत्र के जिला मुख्यालय सहित कुल 46 ग्रामीण व वाणिज्य केद्रों का प्रतिचयन कर एक सर्वेक्षण द्वारा प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह किया गया है। जिसके आधार पर अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण व वाणिज्यिक केन्द्रो के मध्य अंतरप्रक्रिया व उपभोक्ता संचरण दृष्टिगत हुआ। उपभोक्ता संचरण को प्रभावित करने वाले कारकों में प्रमुखतया उपभोक्ताओं की आय व आर्थिक स्थिति का प्रभाव दृष्टिगत होता है। अध्ययन क्षेत्र के बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों के उपभोक्ताओं के अनुसार वहां वर्षाकाल में परिवहन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस लिए वहां के सड़कों को पक्का करने की आवश्याकता महसूस की जाती है। यहॉ हरैया केन्द्र को एक विकसित वाणिज्यिक केन्द्र के रूप में विकास करने की आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र के परिवहन मार्गो से दुर स्थित केन्द्रों के उपभोक्ताओं के अनुसार उनके ग्राम तक परिवहन निगम के बसों का आवागमन होना चाहिए। लेखक चाहता है कि अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण भागों की बीच में स्थित कुछ छोटे वाणिज्यिक के जो शिथिल पड़ चुके उनमें सुविधाओं का विकास कर उन केन्द्रों को विकसित किया जाना चाहिए ताकि उपभोगताओं को नजदीकी केन्द्र पर सुविधाए सुलभ हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

यादव, चन्द्रशेखर (2016), *नगरीय भूगोल*, पॉइटंर पब्लिशर्स।

शर्मा, लोचन, (2014), *आर्थिक एवं मानव भूगोल*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकादमी।

इस्लाम, मोहम्मद (2019), *बलिया जनपद में नगरीकरण एवं समाजार्थिक विकास की प्रकृति*, आयुष्मान प्रकाशन।

बंसल, सुरेश चान्द्र (2011), *आर्थिक एवं वाणिज्यिक भूगोल*, मीनाक्षी प्रकाशन।

मिश्रा, आर. पी. (2007), *क्षेत्रीय नियोजन एवं विकास*, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।

सिंह, जसबीर (201), *भारत का कृषि भूगोल*, टाटा मैक्ग्राहिल।

सिंह, गोपाल (2012), *आर्थिक भूगोल* आत्माराम एण्ड सन्स।

प्रसाद राम, (2019), *नगरीय एवं आर्थिक भूगोल*, विश्वविद्यालय प्रकाशन,

श्रीवास्तव, बी.के. (2021), *भारत का आर्थिक एवं क्षेत्रीय भूगोल*, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

Cristahler, W. (1933) , Centeral Place in Southern Germany,

Lara, A. (1954), *The Economics of Location*, Translated by W. Vegal, Yel University Press New York.

Singh, J. (1979), *Central places and Spatial organization in a Backward Economy : Gorakhpur Region : A Case study in integrated Regional Development*, V.B.B.P., Gorakhpur, pp. 47-55 Translated by Y. E. W. Waskin Ingoloyed Clifs Prentice Hall, (1966).

Ulman, E.L. (1954), *Geographical Spacial Interaction,* ANNALS, A. G, XII,p-283-84.

ABOUT

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

SNAJ

Knowledge Beyond Boundaries...

ABOUT THE JOURNAL

The Shibli National Academic Journal (SNAJ) is an international, multidisciplinary and multilingual research publication dedicated to advancing rigorous scholarship across the humanities, social sciences, education, language and emerging interdisciplinary fields. Published biannually in fully open access online format, SNAJ upholds a double-blind peer review process to ensure the highest standards of academic integrity, originality and scholarly merit. Every article published in the journal is assigned a Crossref-registered Digital Object Identifier (DOI), ensuring permanent discoverability and citation traceability in the global research ecosystem.

AIMS & SCOPE

SNAJ welcomes original research articles, review papers, case studies and scholarly notes in English, Hindi and Urdu, fostering cross-linguistic and cross-cultural academic dialogue while maintaining internationally recognised standards of research publishing.

ISSN 3139-3284 (Online) · Crossref DOI Indexed

chiefeditor@snaj.org.in

www.snaj.org.in

© SNAJ PUBLICATIONS — ALL RIGHTS RESERVED